

पपिरहवा अवशेष

चर्चा में क्यों?

केंद्र सरकार ने हांगकांग में सोथबी को पवित्र पपिरहवा अवशेषों की नीलामी करने से रोकने के लिये एक मज़बूत कूटनीतिक और कानूनी अभियान शुरू किया है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे [भगवान बुद्ध](#) के अवशेष हैं।



प्रमुख बंदि

- पपिरहवा अवशेषों के बारे में:
 - उत्खननकर्त्ताओं ने वर्ष 1898 में उत्तर प्रदेश के पपिरहवा स्तूप में पपिरहवा अवशेषों की खोज की थी, जिसे भगवान बुद्ध की जन्मस्थली, प्राचीन कपलिवस्तु माना जाता है।
 - अवशेषों में हड्डियों के टुकड़े, क्रिस्टल के ताबूत, सोने के आभूषण और अन्य अनुष्ठानिक प्रसाद शामिल हैं।
 - एक ताबूत पर [ब्राह्मी लिपि](#) में एक शिलालेख है जो अवशेषों को प्रत्यक्ष रूप से भगवान बुद्ध से जोड़ता है, जिसमें [उल्लेख किया गया है कि](#) [इन्हें शाक्य कुल](#) द्वारा स्थापित किया गया था।
- अवशेषों का कानूनी संरक्षण:
 - भारत इन अवशेषों को 'AA' पुरावशेषों के रूप में वर्गीकृत करता है, जिससे उन्हें राष्ट्रीय कानून के तहत [उच्चतम स्तर की कानूनी सुरक्षा](#) प्राप्त होती है।
 - भारतीय कानून [इनकी बिक्री या नरियात पर प्रतिबंध](#) लगाता है, तथा इन्हें नीलाम करने या हटाने का कोई भी प्रयास अवैध है।
 - जबकि अधिकांश अवशेष वर्ष 1899 में भारतीय संग्रहालय, कोलकाता को सौंप दिये गए थे, ब्रिटिश उत्खननकर्त्ता विलियम क्लैक्सटन पेपे के वंशजों ने कुछ अवशेष अपने पास रख लिये, जो अब नीलामी बाज़ार में सामने आ रहे हैं।
- भारत की तत्काल कार्रवाई:
 - हांगकांग में प्रस्तावित सोथबी नीलामी के बारे में जानकारी के बाद, संस्कृति मंत्रालय ने कानूनी नोटिस जारी कर इसे तत्काल रोकने की मांग की।
 - [भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण \(ASI\)](#) द्वारा हस्तक्षेप हेतु हांगकांग स्थिति भारत के महावाणिज्य दूतावास से संपर्क किया।

कपिलवस्तु अवशेष:

- वर्ष 1898 में पपिरहवा (उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर के पास) के स्तूप स्थल पर एक उत्कीर्ण ताबूत की खोज से इस स्थान को प्राचीन कपिलवस्तु के साथ पहचानने में सहायता प्राप्त हुई।
- ताबूत के ढक्कन पर अंकित अभिलेख बुद्ध और उनके समुदाय, शाक्य के अवशेषों का उल्लेख करता है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा वर्ष 1971-77 में पुनः स्तूप का उत्खनन किया, जिसमें दो अतिरिक्त शैलखटी अवशेष संदूक मलि, जनिमें कुल 22 पवतिर अस्थिअवशेष थे, जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय में रखे गए हैं।
- इसके बाद पपिरहवा के पूर्वी मठ में विभिन्न स्तरों और स्थानों से 40 से अधिक टैराकोटा मुहरों की खोज हुई, जिससे यह स्थापित हुआ कि पपिरहवा ही प्राचीन कपिलवस्तु था।

गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों (दशावतार) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

जन्म

- सिद्धार्थ के रूप में जन्म (563 ईसा पूर्व)
- जन्मस्थान- लुम्बिनी (नेपाल)
- कपिलवस्तु के निकट

माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक; शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी

महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

गृह त्याग/महान प्रस्थान
(महाभिनिष्क्रमण)

बुद्ध का जन्म

ज्ञान की प्राप्ति (निर्वाण)

प्रथम उपदेश
(धम्मचक्रपरिवर्तन)

मृत्यु (महापरिनिर्वाण)

बुद्ध ने स्वयं को तथागत (वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया (ज्ञान प्राप्ति) (ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए)
- सारनाथ (प्रथम उपदेश)
- वैशाली (अंतिम उपदेश)
- कुशीनगर (मृत्यु (487 ई.पू.) का स्थान)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/piprahwa-relics>